मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत की मुखपत्रिका

मासिक

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

अक्तूबर/नवंबर 2025 इखा/नबुव्वत 1404 हि.श	प्रबंधक अताउल मुजीब लोन	संस्करण-23 अंक -10/11

सम्पादक : सय्यद रसूल नियाज़ | **एज़ाज़ी सम्पादक :** एच्.शम्सुद्दीन

स.सम्पादक(हिन्दी) : वसीम अहमद अज़ीम

संपादन मंडल
सय्यद कलीम अहमद अजबशेर
मोहम्मद इब्राहीम सरवर

मैनेजर
अज़ीज़ अहमद नासिर
9682536974

प्रेस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस
क़ादियान
वार्षिक मूल्य :₹ 250
विदेश: $ 50

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान 143516
जिला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 7837985190

Email:
ansarullah@qadian.in
WEB LINK
https://www.ansarullahbharat.in/Publications/

क्रमांक	विषय सूची	पृष्ठ
1	सम्पादकीय :- खैरात हो मुझको भी इक जल्वा-ए-आम उस का	2
2	दर्सुल क़ुरआन:- मेरा अनुकरण करो! ख़ुदा के प्यारे बन जाओगे।	3
3	दर्सुल हदीस :- रसूल ﷺ के आदर्श उत्तम आचरण और उत्तम व्यवहार	5
4	मल्फ़ूज़ात हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम इस्लाम के मार्गदर्शक (पैगंबर) का सच्चा नबी होना सूर्य के प्रकाश के समान स्पष्ट है!	7
5	हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के फ़रमूदात पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हर तरह की मिसाल अपने आप से और अपने घर से स्थापित करना चाहते थे।	9

संपादकीय

بسم الله الرحمٰن الرحیم
نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم و علی عبدہ المسیح الموعود
ھو الناصر خدا के फ़ज़्ल और रहम के साथ

"खैरात हो मुझको भी इक जल्वा-ए-आम उस का"

कहा जाता है कि किसी से प्रेम की असली बुनियाद या तो उसकी ख़ूबसूरती होती है या दयालुता। जब ये दोनों गुण किसी एक हस्ती में जमा हो जाते हैं, तो पराए दिल भी उसके गुलाम हो जाया करते हैं और उसकी तारीफ़ और गुणगान में लग जाते हैं।

दिखने में यह महज़ एक काल्पनिक विचार लगता है, मगर दुनिया ने अपनी आँखों से एक ऐसा मनमोहक नज़ारा देखा जिसने सबको हैरत और आश्चर्य में डाल दिया।

यह वह दिल को छू लेने वाला नज़ारा था जो हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की महान हस्ती से ज़ाहिर हुआ।

इसलिए मक्का और मदीना की गलियों और कूचों में दीवानगी भरी अक़ीदत से ये आवाज़ें गूँज उठीं طَلَعَ الْبَدْرُ عَلَيْنَا مِنْ ثَنِيَّاتِ الْوَدَاعِ। (हम पर चौदहवीं का चाँद 'सनियातुल वदाअ' की घाटियों से उदय हुआ।)

हसीनान-ए-आलम हुए शर्मगीं,
जो देखा वो हुस्न और वो नूर-ए-जबीं।
फिर उस पर वो अख़लाक़ अकमल तरीं,
कि दुश्मन भी कहने लगे 'आफ़रीं!'

इसी सच्चाई को इस दौर के सच्चे प्रेमी (आशिक़-ए-सादिक़) हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने भी बयान फ़रमाया कि आपने वही मुबारक चेहरा रूहानी (आध्यात्मिक) अनुभव में देखा, जिसके जल्वों ने दिल की दुनिया को बदल डाला, और इसी प्रेम के आनंद में भरकर फ़रमाया:

तेरे मुँह की ही क़सम मेरे प्यारे अहमद
तेरी ख़ातिर से यह सब बार उठाया हमने।

इसी सच्चे प्रेम की रौशनी में, मज्लिस अंसारुल्लाह भारत का मुखपत्र मासिक पत्रिका 'अंसारुल्लाह' यह "उस्वए रसूल" पर विशेष अंक अपने आदरणीय पाठकों को भेंट करते हुए, अल्लाह के सामने बहुत ही विनम्रता और श्रद्धा से दुआ करता है कि:

खैरात हो मुझको भी इक जल्वए आम उस का,
फिर यूँ हो कि हो दिल पर इल्हाम कलाम उस का।
उस बाम से नूर उतरे, नग़मात में ढल-ढल कर,
नग़मों से उठे खुशबू, हो जाए सुरूद-ए-अम्बर।
(कलाम-ए-ताहिर)

(एच. शमसुद्दीन)

दर्सुल क़ुरआन

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानीरज़ि

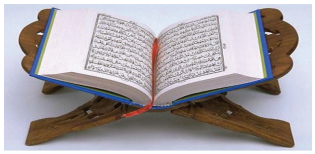

मेरा अनुकरण करो! ख़ुदा के प्यारे बन जाओगे!!

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○

(ऐ मुहम्मद ﷺ) आप उनसे कह दीजिए कि यदि तुम ख़ुदा के महबूब बनना चाहते हो (जैसा कि मैं ख़ुदा का महबूब बना हूँ) तो मेरी राह पर चलो पूरे तौर पर। तब तुम भी ख़ुदा के महबूब बन जाओगे और तुम्हारे गुनाह बख़्श दिए जाएँगे और ख़ुदा ग़फ़ूर-ओ-रहीम है।

ख़ुदा का महबूब बनकर इंसान को कभी ज़िल्लत, रुसवाई और नाकामी नहीं हो सकती और आदमी कभी भी ज़लील तरीन नहीं बन सकता।

अगर तुम ख़ुदा के प्यारे बनना चाहते हो तो मेरे अनुकरण में आ जाओ। ख़ुदा तुमसे प्यार करेगा। ख़ुदा का महबूब बनकर इंसान को कभी ज़िल्लत, रुसवाई और नाकामी नहीं हो सकती और आदमी कभी भी तुच्छ नहीं बन सकता। ख़ुदा का महबूब बनना नबी करीम ﷺ की इताअत पर निर्भर है और यह इताअत इंसान कर सकता है। इस इताअत के लिए सहाबा कराम का नमूना मौजूद है और तुम सब कर सकते हो। मैंने बार-बार कुरआन करीम इसी मक़सद से पढ़ा है कि देखूं क्या इसमें कोई ऐसा हुक्म है जिस पर हम अमल नहीं कर सकते, लेकिन मैंने कोई भी कुरआनी हुक्म ऐसा नहीं देखा जिस पर अमल करना मुश्किल हो। कुरआन करीम के ख़िलाफ़ अमल करने में रुपया भी ज़्यादा ख़र्च होता है, मगर कुरआन करीम की फ़रमानबरदारी में ज़्यादा रुपया भी ख़र्च नहीं होता। अमरीका जाने का ख़र्च, पैरिस, जर्मनी, लंदन जाने का ख़र्च और इसके मुक़ाबले में मक्का जाने का ख़र्च देखो। नमाज़ के ख़र्च और उस्तरे

के ख़र्च का मुक़ाबला करो। रोज़े और शराब के ख़र्च का मुक़ाबला करो तो पता लग जाएगा। मुहम्मद ﷺ की इताअत में इंसान जनाब-ए-इलाही का महबूब बन सकता है।

मुझे आज तक कोई ऐसी बात नज़र नहीं आई कि नबी करीम ﷺ की फ़रमानबरदारी में तकलीफ़ हो। (बदर, 30 जनवरी 1913)

सच्चे व्यक्ति को सच्चाई में कितनी ताक़त दी जाती है और रास्ती (सच्चाई) में कितनी क़ुव्वत होती है, इसका अंदाज़ा इस आयत से किया जा सकता है। देखो, मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ को हुक्म हुआ कि ऐलान कर दो – मैंने ख़ुदा की फ़रमानबरदारी करके यह मक़ाम हासिल किया, अब तुम मेरे पीछे-पीछे चलो, तुम भी ख़ुदा के महबूब बन जाओगे। हर शख़्स की ज़िंदगी का आराम उस बस्ती के मुखिया की मेहरबानी से जुड़ा होता है। फिर उस गाँव के नम्बरदार से ऊपर चलें तो ज़िले का हाकिम है। तो अल्लाह जो रब, रहमान, रहीम और मालिक है, उसके साथ ताल्लुक किस क़दर सुकून और राहत का कारण हो सकता है। यहाँ सिर्फ़ ताल्लुक का वादा नहीं बल्कि यह फ़रमाया कि ख़ुदा हमें अपना महबूब बना लेगा। आस्तिक (मोमिन) इसे देखे और तजुर्बा करे, क्या आज़माया हुआ नुस्ख़ा है! मैं अक्सर इस आयत को पढ़कर बेक़ाबू होकर नबी करीम ﷺ पर दुरूद भेजता रहता हूँ। (ज़मीमा अख़बार बदर, 27 मई 1909)

★ ★ ★

ईद मिलादुन नबी की हक़ीक़त

हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़

"12 रबीउल अव्वल... जो पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जन्म का दिन है और मुसलमानों का एक हिस्सा इसे बड़े जोश और उत्साह से मनाता है... भारतीय उपमहाद्वीप में भी कुछ लोग बड़ा इंतज़ाम करते हैं। कुछ लोग जो हमारे आलोचक और विरोधी हैं, उनका यह भी एक एतराज़ (आपत्ति) होता है। वे मुझे भी लिखते हैं, अहमदियों से भी पूछते हैं कि अहमदी लोग यह दिन इतने इंतज़ाम से क्यों नहीं मनाते? तो इस बारे में आज मैं कुछ कहूँगा और हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलातु वसल्लम) ने इस बारे में क्या इरशाद फरमाया है? (वह बयान करूँगा) जिससे यह स्पष्ट होगा कि असल में अहमदी ही हैं जो इस दिन की कद्र करना जानते हैं। लेकिन हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलातु वसल्लम) के उद्धरण से पहले मैं यह भी बता दूं कि मौलूदुन नबी (पैगंबर के जन्म का उत्सव) कब से मनाना.... **शेष पृष्ठ-6 पर**

दर्सुल हदीस

आंहुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया:

اِنَّمَا بُعِثْتُ لِاُتَمِّمَ مَكَارِمَ الْاَخْلَاقِ

"मुझे तो सिर्फ़ ऊँचे और उत्तम आचरण (अख़लाक़) की तकमील (पूर्णता) के लिए भेजा गया है।

(सुनन कुबरा लिल-बैहक़ी, किताब-उश-शहादात, बयान मक़ारिमुल अख़लाक़, जिल्द 10, पृष्ठ 192, सन 355 हिजरी)

रसूल ﷺ के आदर्श उत्तम आचरण और उत्तम व्यवहार

अल्लाह तआला ने नबी अकरम ﷺ की पवित्र जिंदगी को हमारे लिए सर्वोत्तम आदर्श माना गया है। उनकी मोहब्बत और प्यार में डूबकर उनकी पालन-पोषण करना इंसान के लिए अल्लाह तआला की मोहब्बत और उसके करीब आने के रास्ते खोल देता है। नबी ए अकरम ﷺ को इंसानियत के दिलों को जीतने और अपनी ओर आकर्षित करने के लिए दो बड़ी ताकतें दी गईं एक उत्तम आचरण और दूसरी उत्तम व्यवहार। ये दोनों अलग-अलग शब्दों में दिखती हैं लेकिन वास्तव में ये दोनों एक ही तस्वीर के दो पहलू हैं। अल्लाह तआला ने नबी ए अकरम ﷺ से कहा (और पूरी दुनिया को बताने के लिए) फरमाया :- وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ कि ऐ रसूल! तुझे महान आचरण का ऐसा अद्भुत चमत्कार दिया गया है जो तुझसे पहले किसी नबी को इस तरह नहीं मिला। इसके परिणामस्वरूप इंसानियत के दिल तेरी ओर आकर्षित होंगे..... नबी अकरम ﷺ को जितने भी रूहानी चमत्कार दिए गए, उनमें सबसे बड़ा चमत्कार उत्तम आचरण का था। आपके इस आचरण ने इंसानियत के दिलों को झकझोर दिया और उन्हें ग़लतफहमी की नींद से बाहर निकाला।

आप ﷺ का दूसरा चमत्कार, जो इसी आचरण के साथ-साथ चलता है, उत्तम व्यवहार का चमत्कार है। अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में फ़रमाया है कि हमने तुझे पूरी इंसानियत के लिए रहमत बनाकर भेजा है चाहे वे गोरे हों, गेहुँए या काले, छोटे क़द

की क़ौमें हों या लंबे क़द की अमीर हों या गरीब पढ़े-लिखे हों या अनपढ़ ताकतवर हों या कमजोर। सबके लिए नबी ए अकरम ﷺ रहमत और मार्गदर्शक बनकर आए।

आप ﷺ मानवीय आचरण का सबसे उत्तम सार और केंद्र बिंदु थे। आप पहले और आख़िरी लोगों के लिए बरकत और रहमत का कारण बने। आपकी पवित्र जिंदगी से दो बड़ी नहरें बह निकलीं उत्तम आचरण और उत्तम व्यवहार की। ये नहरें दुनिया के हर कोने में फैल गईं और क़ियामत तक फैलती रहेंगी।

रसूल करीम ﷺ की जिंदगी का हर पहलू, हर व्यवहार, हर आचरण और हर व्यवहारिक उदाहरण दुनिया के लिए एक पूर्ण नमूना है। अगर हम वह मुकाम हासिल करना चाहते हैं जिसके लिए नबी ए अकरम ﷺ भेजे गए थे, तो हमारे लिए जरूरी है कि हम इन दो बुनियादी गुणों का पालन करें और उनकी परछाई बनने की कोशिश करें ताकि हमारे ज़रिए उनके रूहानी प्रभाव दुनिया में जारी रहें। आज के दौर में इन दोनों गुणों की सबसे ज़्यादा जरूरत है क्योंकि दुनिया का एक बड़ा हिस्सा अच्छे व्यवहार का इंतजार कर रहा है। इसलिए हम सब पर यह फ़र्ज़ है और जमाअत अहमदिया की बड़ी जिम्मेदारी है कि हम इंसानियत के दिलों को मोहम्मद ﷺ और उनके रब के लिए जीतें। (ख़ुतबा जुमा फ़रमूदा 1 अगस्त 1969)

★ ★ ★

शेष पृष्ठ 4- शुरू किया गया। इसकी तारीख़ क्या है? मुसलमानों में भी कुछ फिरके (समूह) मिलादुन्नबी को नहीं मानते हैं। इस्लाम की पहली तीन सदियाँ जो बेहतरीन सदियाँ कहलाती हैं, उन सदियों के लोगों में पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से जो मुहब्बत (प्रेम) पाया जाता था, वह अत्यंत उच्च स्तर का था और वे सब लोग सुन्नत (पैगंबर की परंपरा) का बेहतरीन ज्ञान रखने वाले थे और सबसे ज़्यादा इस बात के उत्सुक थे कि पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शरीयत (कानून) और सुन्नत का पालन किया जाए। लेकिन इसके बावजूद इतिहास हमें यही बताता है कि किसी सहाबी (साथी) या ताबेई जो सहाबा के बाद आए, जिन्होंने सहाबा को देखा हुआ था, उन के ज़माने में ईद मिलादुन्नबी का ज़िक्र नहीं मिलता। वह शख़्स (व्यक्ति) जिसने इसका आग़ाज़ (शुरुआत) किया, उसके बारे में कहा जाता है कि यह अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह क़द्दाह था। जिसके अनुयायी फ़ातिमी कहलाते हैं और वह अपने आप को हज़रत अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) की औलाद से जोड़ते हैं।

इस्लाम के मार्गदर्शक (पैगंबर) का सच्चा नबी होना सूर्य के प्रकाश के समान स्पष्ट है!

बेसहारा और गरीब होने के बावजूद भी उन्होंने ऐसा साहस दिखाया कि राजाओं को उनके सिंहासन से उतार दिया और गरीबों को उन पर बैठाया!

"पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जीवन की घटनाओं पर गौर करने से यह बात बहुत स्पष्ट, महत्वपूर्ण और साफ हो जाती है कि आप उच्च श्रेणी के सरल, पवित्र हृदय वाले, अल्लाह के लिए अपनी जान कुर्बान करने वाले, लोगों के डर और उम्मीद से बिल्कुल दूर रहने वाले और सिर्फ़ अल्लाह पर भरोसा करने वाले थे। जिन्होंने अल्लाह की इच्छा में लीन और फ़ना होकर इस बात की बिल्कुल परवाह नहीं की कि तौहीद (एकेश्वरवाद) का प्रचार करने से क्या-क्या मुसीबतें उनके सिर पर आएँगी और मुशरिकों (मूर्तिपूजकों) के हाथों से क्या-क्या दु:ख और दर्द उठाना पड़ेगा। बल्कि सभी मुश्किलों, और कठिनाइयों को अपने ऊपर सहकर अपने मालिक के हुक्म का पालन किया। और मुजाहिदे (धर्म के लिए संघर्ष), उपदेश और नसीहत की जो भी शर्तें थीं, वे सब पूरी कीं और किसी डराने वाले को कुछ भी नहीं समझा। हम सच-सच कहते हैं कि सभी नबियों के जीवन में ऐसे खतरों के मौकों पर और फिर कोई ऐसा अल्लाह पर भरोसा करके खुले तौर पर शिर्क (मूर्तिपूजा) और सृष्टि (रचना) की पूजा से मना करने वाला और इस तरह के दुश्मन होने पर भी ऐसा स्थिर और अटल रहने वाला एक भी साबित नहीं है।"

"इस्लाम के मार्गदर्शक (पैगंबर) का नबी होना सूर्य के प्रकाश के समान स्पष्ट है। क्योंकि नबूवत का अर्थ और पैगंबरी का अंतिम उद्देश्य उन्हीं के पवित्र व्यक्तित्व में साबित और साकार हो रहा है। और जिस तरह निर्मित वस्तुओं से बनाने वाले को पहचाना जाता है, वैसे ही बुद्धिमान लोग वर्तमान सुधार से उस ईश्वरीय सुधारक को पहचान रहे हैं। इसी तरह हज़ारों और भी ऐसी घटनाएँ हैं जिनसे पैगंबर मुहम्मद

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का ईश्वरीय सहायता से पुष्ट होना साबित होता है। उदाहरण के लिए: क्या यह हैरान करने वाली घटना नहीं है कि एक बेबस, बेसहारा, अकेला, अनपढ़, यतीम, अकेला और गरीब व्यक्ति ऐसे समय में, जब हर एक कौम पूरी-पूरी आर्थिक, सैन्य और शैक्षिक ताकत रखती थी, ऐसी उज्ज्वल शिक्षा लेकर आया कि अपने ठोस सबूतों और स्पष्ट तर्कों से सबकी ज़बान बंद कर दी। और बड़े-बड़े लोगों की जो खुद को बुद्धिमान और दार्शनिक कहते थे, उनकी बड़ी गलतियाँ निकाल दीं। और फिर बेसहारा और गरीब होने के बावजूद भी उन्होंने ऐसा साहस दिखाया कि राजाओं को उनके सिंहासन से उतार दिया और उन्हीं सिंहासनों पर गरीबों को बैठाया।

अगर यह अल्लाह की सहायता नहीं थी तो और क्या थी? क्या पूरी दुनिया पर बुद्धि, ज्ञान, शक्ति और बल में विजय प्राप्त करना अल्लाह की मदद के बिना भी होता है?"

(रुहानी खज़ायन खंड एक/ बराहीन अहमदिया भाग दो। पृष्ठ 111 और 119)

"इस पवित्र पैगंबर के उपदेश और शिक्षा ने हज़ारों मुर्दों में तौहीद की आत्मा फूंक दी और दुनिया से तब तक नहीं गए जब तक हज़ारों इंसानों को एक ईश्वर का मानने वाला नहीं बना लिया।" (रुहानी खज़ायन खंड 13/ किताबुल बरिया। पृष्ठ 154)

हक़ीक़त में उस महिमा में, किसी दिल के लिए जो उस ईश्वरीय सहायता का कारण बनता है, एक बरकत और रहमत पैदा हो जाती है।

इसलिए ख़ुदा का भेजा हुआ जब मदद माँगता है, तो उसका असली रहस्य और राज़ यही है, और यह क़यामत तक इसी तरह रहेगा।

दीन के प्रचार और प्रसार में ख़ुदा का रसूल दूसरों से मदद चाहता है। लेकिन क्यों? अपने फ़र्ज़ की अदायगी के लिए, ताकि दिलों में ख़ुदा की महानता पैदा हो। वरना यह तो ऐसी बात है कि लगभग कुफ़्र तक पहुँच जाती है, अगर ग़ैर-ख़ुदा को मालिक ठहराया जाए और इन पवित्र आत्माओं से ऐसा होना बिल्कुल असंभव है।

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 1, पृष्ठ 107-108)

★ ★ ★

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के फ़रमूदात

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हर तरह की मिसाल अपने आप से और अपने घर से स्थापित करना चाहते थे।

"पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: मैं अपने परिवार के लिए यह पसंद नहीं करता कि वे इसी दुनिया में ही सारी सुख-सुविधाएं और आराम हासिल कर लें।"

"आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) चाहते थे कि आपकी संतान सादगी से जीवन बिताए और अल्लाह के आदेशों का पालन करे, इबादत करने वाली हो और उसमें श्रेष्ठता प्राप्त करने वाली हो। उन्हें दुनिया की चीज़ों से कोई लगाव न हो। लेकिन यह बात पैदा करने के लिए आपने कभी सख़्ती नहीं की। या तो आराम से समझाते थे या अपने व्यवहार से इस तरह जाहिर करते थे कि उन्हें खुद ही एहसास हो जाए। इस संदर्भ में एक रिवायत आती है। हज़रत सौबान (रज़ि०) से रिवायत है कि पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जब किसी सफर पर जाते तो सबसे आखिर में अपने परिवार वालों में से हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) से मिलते और जब वापस तशरीफ़ लाते तो सबसे पहले हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) के घर तशरीफ़ ले जाते। एक बार जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) एक युद्ध से वापस तशरीफ़ लाए तो हज़रत फ़ातिमा के यहाँ गए। जब दरवाज़े पर पहुँचे तो देखा कि दरवाज़े पर एक पर्दा लटका हुआ था और हज़रत हसन और हज़रत हुसैन (रज़ि०) ने चांदी के दो कड़े पहने हुए थे। आप के बड़े लाडले नवासे थे। जब आपने यह देखा, आप घर में अंदर नहीं गए। बल्कि वापस चले गए। हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) भांप गईं कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को इन चीज़ों ने घर में आने से रोका है। इस पर हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) ने पर्दा फाड़ दिया और बच्चों के कड़े लेकर तोड़ दिए।

इसके बाद दोनों बच्चे रोते हुए पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास गए। पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उनमें से एक बच्चे को उठाया और रावी (कथावाचक) कहते हैं कि मुझे फ़रमाया कि इसके साथ मदीना में फलां के यहाँ जाओ और फ़ातिमा के लिए एक हार और हाथी दांत के बने हुए दो कंगन ले आओ और फिर फ़रमाया कि मैं अपने परिवार के लिए यह पसंद नहीं करता कि वे इसी दुनिया में ही सारी सुख-सुविधाएं और आराम हासिल कर लें।"

(सुनन अबी दाऊद। किताबुत्तरजिल। बाब फिलइंतेफ़ाई बिलआज)

(जुमा के खुत्बे से, 19 अगस्त 2005)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT

TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)